गोहा - एक बुद्धिमान मूर्ख

पुनर्कथित: डेनिस जॉनसन-डेविस

चित्र: मोहम्मद फतह

गोहा - एक बुद्धिमान मूर्ख

पुनर्कथित: डेनिस जॉनसन-डेविस

चित्र: मोहम्मद फतह

विषयवस्तु

गोहा ने टोकरी उठाई

हमेशा की तरह, सप्ताह में एक या दो बार, गोहा अपने गधे पर काठी बाँधता और बाजार में सबसे ताजे और मौसमी फल और सब्जियां खरीदने के लिए निकल पड़ता. इस बार, गोहा ने पूरी टोकरी अपने कंधे पर रखी और फिर वो गधे पर चढ़ गया.

घर जाते समय उसके दोस्त ने उसे रोका और पूछा. "क्या गधे पर सामने टोकरी को रखना आपके लिए आसान नहीं होगा? फिर आप गधे को बाजार में लेकर क्यों गए?"

"लेकिन वो मेरे अच्छे गधे के लिए उचित नहीं होगा," गोहा ने उत्तर दिया. "क्या यह पर्याप्त नहीं है कि वो बेचारा मुझे ढोए? मैं कम-से-कम इतना तो कर ही सकता हूं कि टोकरी को उठाऊँ."

गोहा और जूते

गोहा के कुछ दोस्तों ने उस पर एक चाल चलने का फैसला किया. उन्होंने उसका दरवाजा खटखटाया, और यह नाटक किया कि गोहा ने उन्हें उस दिन अपने घर पर दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया था. गोहा काफी शर्मिंदा हुआ. वे स्वभाव से एक अच्छा और उदार व्यक्ति था लेकिन उसे उन लोगों को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित करना बिल्कुल याद नहीं था.

लेकिन उसने कहा, "स्वागत है, दोस्तों, स्वागत है." और जब उन्होंने अपने जूते द्वार पर छोड़े उसके बाद गोहा उन्हें अंदर पार्लर में ले गया.

फिर, जल्दी से, वो अपनी पत्नी के पास गया और उसे सारी बात बताई. "लेकिन, गोहा," पत्नी ने कहा, "घर में बिल्कुल खाना नहीं है! आपने उन्हें दोपहर के भोजन के लिए कैसे आमंत्रित किया?"

"मैंने उन्हें आमंत्रित नहीं किया है!" गोहा ने कहा.

"अच्छा," उसकी पत्नी ने कहा, "तो वे तुम्हें बरगलाने की कोशिश कर रहे हैं. उन्हें पार्लर में छोड़ दो; वे जल्द ही इंतजार करते-करते थक जाएंगे और फिर वे अपने घर चले जाएंगे."

गोहा ने उनकी चाल पर हंसते हुए दोस्तों को पार्लर में छोड़ दिया. वहाँ उसके दोस्त भोजन की प्रतीक्षा करते रहे. फिर गोहा ने दोस्तों पर खुद अपनी एक चाल चलने का फैसला किया. वो चुपके से दरवाजे पर गया, और उसने दरवाजे के पास छोड़े जूतों को इकट्ठा किया और बाजार में जाकर उन्हें बेच दिया!

उसने उन जूतों से मिले पैसों से जल्दी से उसने कुछ भोजन खरीदा.

अंत में, उसकी पत्नी ने सब मेहमानों को भोजन परोसा. सबने पेट भरकर खाया. क्योंकि उन्होंने बहुत देर तक प्रतीक्षा की थी, इसलिए वे बहुत भूखे थे. लेकिन जब वे गोहा को अलविदा कहने आए तो उनमें से किसी को भी अपने जूते नहीं मिले.

"हमारे जूते कहाँ हैं?" वे गोहा पर चीखे-चिल्लाए.

"आपके जूते," गोहा ने शांति से उत्तर दिया, "अब आपके पेट में हैं!"
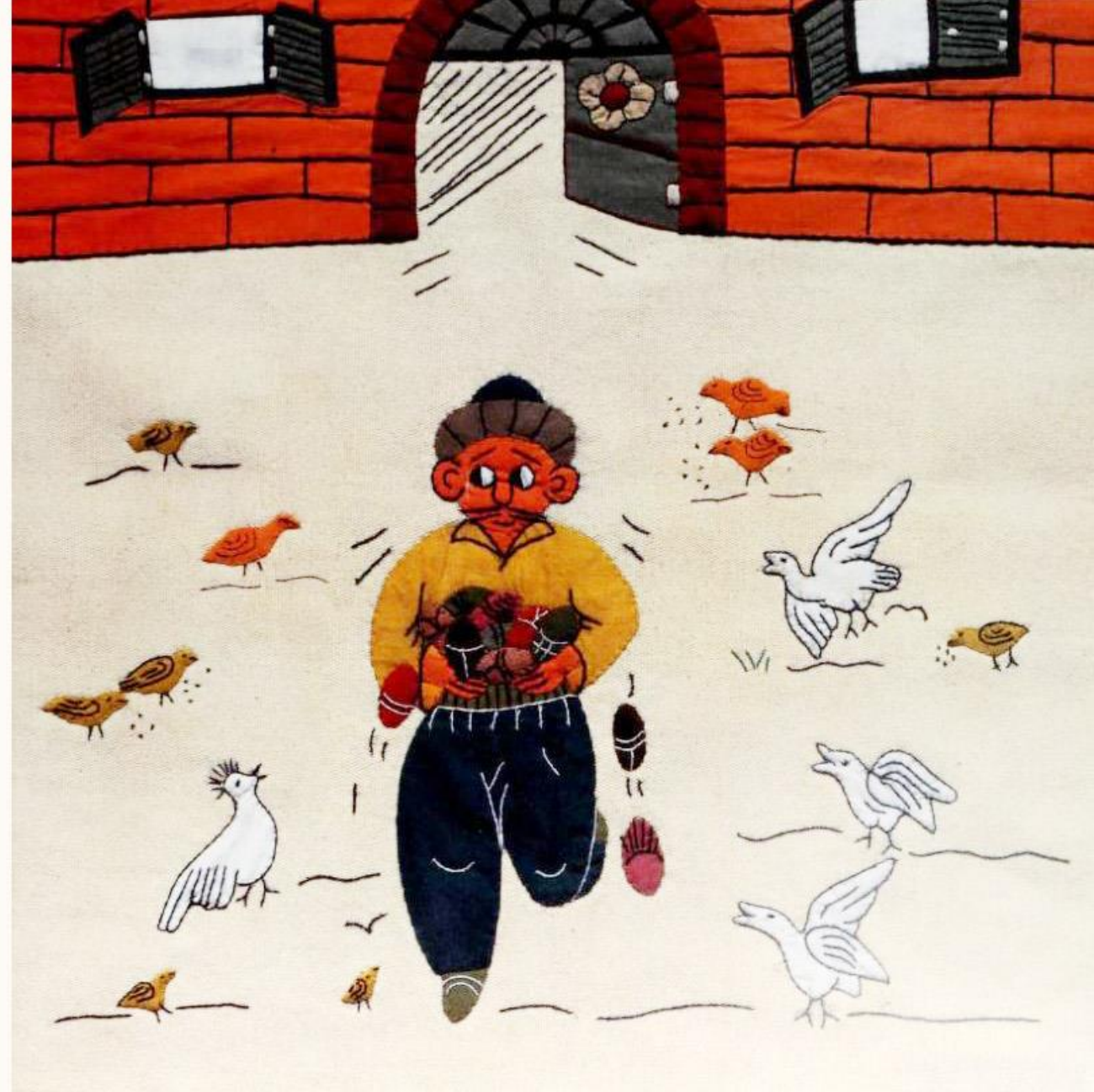
गोहा ने अपने गधों को गिना

गोहा ने देखा कि व्यापारी की ज़िंदगी एक अच्छा जीवन था. फिर उसने खुद एक व्यापारी बनने का फैसला किया और और गधों को खरीदने-बेंचने का धंधा शुरू किया. खुशी से, वो बाजार गया, और वहां उसने कई गधों को देखा. अंत में, उसने बारह बढ़िया गधे खरीदे. अब, उसने सोचा कि मैं उन्हें घर ले जाऊँगा. फिर मैं कल से अपना व्यापार शुरू करूंगा.

वो एक गधे पर चढ़ गया, और दूसरों को उसने सामने से हांका. फिर उसने अपने गधों को गिनने करने की सोची. उसने गिना - एक, दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह . . . ग्यारह गधे!

लेकिन उसने अभी-अभी बारह गधे ख़रीदे थे! सिर खुजलाते हुए, वो अपने गधे से नीचे उतरा और उन्हें फिर से गिना. एक दो. तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह. . . बारह! अब गधे बारह हो गए थे. वो बेहतर था.

फिर से ख़ुशी-ख़ुशी वो वापस उस गधे पर चढ़ गया जिस पर वो सवार था. लेकिन, यह सुनिश्चित करने के लिए उसने फिर से अपने गधों की गिनती की. लेकिन वो केवल ग्यारह ही थे! वो फिर से नीचे उतरा और उसने उन्हें गिना - वे बारह थे.

उसने अपना सिर खुजलाया. गधे कभी ग्यारह तो कभी बारह हो जाते थे. "लेकिन," उसने कहा, "यदि मैं चलता हूं, तो मुझे एक और गधा मिलता है, जो कि सवारी करने और गधे को खोने से बेहतर है."

इसलिए वो अपने घर तक उन बारह गधों के पीछे-पीछे चला, जिन्हें उसने अभी-अभी बाजार से खरीदा था.

गोहा एक पार्टी में गया

वो एक खूबसूरत दोपहर थी और गोहा शहर के चारों ओर सैर का आनंद ले रहा था. अचानक एक पत्थर उसके ठीक पास आकर गिरा. उसने मुड़कर देखा तो देखा कि कुछ लड़के उस पर पत्थर फेंक रहे हैं.

"क्या मैं भी उन पर पत्थर फेंकूं या फिर यहाँ से भाग जाऊं?" उसने खुद से पूछा. तभी उसके दिमाग में एक अच्छा विचार आया, और उसने लड़कों को पुकारा:

"अरे! अगर तुम लोग पत्थर फेंकना बंद कर दोगे तो मैं तुम्हें एक अच्छी खबर सुनाऊंगा!"

लड़कों ने पत्थर फेंकना बंद कर दिए. "हमें बताओ. हमें बताओ!" लड़के चिल्लाए.

राज्यपाल अपने महल में एक पार्टी आयोजित कर रहे हैं. वहां क्रीम केक से भरी मेजें हैं, और सभी लोग आमंत्रित हैं!"

एक झटके में लड़के सड़क पर भागते हुए नीचे महल की ओर दौड़ पड़े, जबकि गोहा खड़े होकर उन्हें देखता रहा. फिर अचानक गोहा भी महल की ओर भागने लगा.

"आखिरकार," उसने दौड़ते हुए खुद से कहा, "किसे पता, यह खबर सच भी हो सकती है!"

गोहा ने आश्चर्य किया कि उसकी बिल्ली कहाँ है?

गोहा को अचानक उस शाम अच्छा खाना खाने का मन हुआ, इसलिए वो बाजार गया और उसने वहां से तीन पाउंड का सबसे अच्छा मेमना खरीदा, और उसे वापिस घर लाया.

"यहाँ," उसने अपनी पत्नी से तीन पाउंड भेड़ का बच्चा देते हुए कहा. "इसे पकाओ. इससे उम्दा भोजन बनेगा."

गोहा की पत्नी, जो एक उत्कृष्ट रसोइया थी, ने मांस को टुकड़ों में काटा और उसमें अलग-अलग सब्जियां और निश्चित मात्रा में चावल डाले. फिर उन्हें पकने के लिए बर्तन में डाल दिया. अंत में, उसने मांस को पकाने के लिए शोरबे में डाल दिया. जल्द ही पूरा घर मेमने के शोरबे की बुदबुदाती हुई महक से भर गया.

अब ऐसा हुआ कि गोहा के पड़ोसी की पत्नी के पास कुछ मेहमान आए थे, और उन्होंने उस स्वादिष्ट शोरबे को सूंघा. "चलो उनसे मिलने जाते हैं," एक ने कहा. इसलिए, वे अगले दरवाजे से अंदर घुसे और सभी खाना पकाने के बर्तन के चारों ओर झुक गए.

गोहा की पत्नी ने भाप निकलते शोरबे में एक चम्मच डालते हुए और मांस का एक टुकड़ा खाते हुए कहा, "चलो एक-एक छोटे से टुकड़े से शुरू करते हैं." फिर प्रत्येक महिला ने अपना-अपना चम्मच बर्तन में डाला और मांस का एक-एक टुकड़ा खाया. "बहुत स्वादिष्ट. बहुत स्वादिष्ट." उन्होंने कहा.

फिर से, उन्होंने शोरबे के नमूने को चखा. वही चीज़ बार-बार करने में पूरी दोपहर निकल गई. जल्द ही सारा मांस ख़त्म हो गया. बड़ी डरी हुई निगाहों से गोहा की पत्नी ने बर्तन में झाँका. उसके पति का पूरा खाना गायब हो गया था!

जब गोहा घर आया, तो पत्नी ने उसे बताया कि उसके खाने के लिए केवल कुछ सब्जियां और चावल ही बचा था.

"मैंने खरीदा तीन पाउंड मांस खरीदा था उसका क्या हुआ?" गोहा ने पूछा.

"प्रिय पति, हमारी वह दुष्ट बिल्ली सोई में घुस गई और मेरी पीठ मुड़ते ही उसने सब कुछ खा लिया."

फिर गोहा बिल्ली की तलाश में गया, और उसे पकड़ कर घर में लाया. उसने बिल्ली को एक जोड़ी तराज़ू पर रखा. उसका वजन ठीक तीन पाउंड था!

"अगर यह बिल्ली तीन पाउंड की है, प्रिय पत्नी, तो फिर मांस कहाँ है? लेकिन अगर यह मांस है, तो फिर बिल्ली कहाँ है?"

गोहा तैरने गया

वो इतना गर्म दिन था कि गोहा नदी में डुबकी लगाने से ज्यादा सुखद और कुछ नहीं सोच सकता था. इसलिए उसने कपड़े उतारे और अपने कपड़े नदी के किनारे एक बंडल बनाकर छोड़ दिए.

लेकिन जब वो ठंडे पानी में डुबकी लगाकर बाहर आया तो गोहा ने पाया कि उसके कपड़े कोई उठाकर ले गया था.

उससे गोहा ने अपना सबक सीखा. जब वो अगली बार नदी में तैरने गया तो वो पूरे कपड़े पहनकर पानी में गया. जब लोगों ने उसे भीगे हुए कपड़े के साथ नदी से बाहर आते देखा, तो वे उस पर हँसे.

"तुम कितने मूर्ख हो!" उन्होंने उससे कहा. "कि तुम अपने सारे कपड़े पहनकर तैरने जाते हो?"

गोहा ने उत्तर दिया, "मैं अपने गीले कपड़े इसलिए पहनना पसंद करता हूँ, जिससे कोई मेरे सूखे कपड़े पहनकर भाग न जाए."

गोहा भालू का शिकार करने गया

एक दिन नगर के राज्यपाल ने गोहा को अपने साथ भालू के शिकार पर जाने के लिए आमंत्रित किया. उन्हें गोहा की मनोरंजक बातचीत पसंद आती थीं. अब, सच तो यह है कि गोहा भालू का शिकार करने के लिए बिल्कुल उत्सुक नहीं था. असल में इस विचार ने उसे काफी हिला दिया था. लेकिन जब राज्यपाल जैसा कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति आपको कुछ करने को आमंत्रित करे, तो उसे स्वीकार करना ही बेहतर होता है.

इसलिए गोहा ने एक दिन पहाड़ों पर चढ़कर, भालुओं का शिकार करते हुए बिताया.

शहर वापस आने पर, गोहा से उसके दोस्तों ने पूछा कि क्या भालू का शिकार सफल रहा?

"पूरी तरह से सफल," गोहा ने कहा.

"पहाड़ों में तुमने कितने भालुओं का पीछा किया?" एक दोस्त ने पूछा.

"एक का भी नहीं," गोहा ने कहा.

"तुमने कितने भालू मारे?" एक दोस्त ने पूछा.

"एक भी नहीं," गोहा ने कहा.

"तुमने कितने भालू देखे?"

"एक भी नहीं," गोहा ने फिर कहा.

"लेकिन फिर, तुम यह कैसे कह सकते हो कि वो एक सफल भालू का शिकार था जब तुमने एक भी भालू नहीं देखा?"

जवाब देते हुए गोहा ने सिर हिलाया. "दोस्तों, भालू का शिकार करते समय, सबसे अच्छा यही होता है कि आप एक भी भालू न देखें."

गोहा ने चोरों को बुद्धू बनाया

गोहा अपने शहर के पास एक सड़क के किनारे टहल रहा था, तभी दो लोगों ने झाड़ियों में से छलांग लगाई और उसे चाकू से धमकाया.

"तुम तुरंत अपना पैसा दे दो नहीं तो हम तुम्हें मार डालेंगे," उनमें से एक चोर ने कहा. उसने गोहा के गले पर चाकू रख दिया.

वैसे गोहा के पास उस दिन पैसे नहीं थे. वो चोरों को यह बताने वाला था कि उसके पास कोई पैसे नहीं थे, लेकिन तभी उसने महसूस किया कि उससे उसके हमलावर क्रोधित हो सकते थे और उसका गला काट सकते थे.

"तुम्हें पता है," गोहा ने उन दोनों लुटेरों से कहा, "आज तुम्हारा भाग्यशाली दिन है, क्योंकि मैं संयोग से अपने साथ एक बड़ी राशि लेकर जा रहा हूं."

गोहा की बात सुनकर दोनों लुटेरों के चेहरे खिल उठे.

"फिर तुरंत पैसे सौंप दो फिर हम तुम्हें जाने देंगे," उन्होंने गोहा से कहा.

"धत्तेरे की," गोहा ने कहा. "मुझे लगता है कि मुझे आप में से सिर्फ एक को पैसे देना चाहिए. आप आपस में मन बना लें कि मैं किसको पैसे दूँ."

देखते-ही-देखते दोनों लुटेरे आपस में गाली-गलौज करने लगे. जल्द ही उनकी लड़ाई मुट्ठियों, लातों और फिर चाकुओं की लड़ाई में बदल गई! कुछ देर तक गोहा खड़ा उन्हें देखता रहा. फिर, यह देखकर कि चोरों की रूचि लड़ाई में अधिक थी और उसमें कम, वो वहां से खिसक लिया और उसने अपनी यात्रा जारी रखी.

गोहा और बीस बत्तखें

गोहा का एक पड़ोसी उसके पास आया. सुबह का समय था.

"गोहा, मेरे दोस्त," पड़ोसी ने कहा, "मैं अपने धंधे के काम से कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा रहूं. क्या आप कुछ दिनों के लिए मेरी बत्तखों की देखभाल कर सकेंगे?"

"खुशी के साथ," गोहा ने उत्तर दिया. "बस बत्तखों को मेरे आँगन में लाकर छोड़ दो. मैं वहां उन्हें पानी और भोजन दूंगा."

अगले दिन वो आदमी अपनी बत्तखों को साथ में लाया. "वो कुल बीस हैं," उसने गोहा से कहा.

"मैं उन पर नजर रखूंगा." गोहा ने उससे कहा.

लेकिन जब पड़ोसी कुछ दिनों बाद घर लौटा, और उसने अपनी बत्तखों को गिना तो उसने पाया कि वे केवल उन्नीस ही थीं!

"मेरी एक बत्तख गायब है," पड़ोसी ने कहा. "गोहा, मेरे दोस्त, कहीं तुमने एक बत्तख रात के खाने के लिए तो नहीं पका ली."

"अगर मैंने ऐसा किया होता, तो मैं आपको ज़रूर बताता," गोहा ने उसे उत्तर दिया.

"शायद किसी रात कोई लोमड़ी आई हो एक बत्तख को लेकर भाग गई हो," पड़ोसी ने सुझाया.

"निश्चित रूप से, कोई लोमड़ी मेरे यार्ड में नहीं आई," गोहा ने कहा. "जब आप अपनी बत्तखों को मेरे यहाँ लाए थे, तो आपने कहा कि वे बीस थीं. ठीक है, मेरे दोस्त, वो अभी भी बीस हैं."

दोनों आदमी बहस करते रहे, पड़ोसी ने उन्नीस गिनीं और गोहा ने जोर देकर कहा कि बत्तखें बीस थीं.

पड़ोसी बहुत गुस्सा हुआ, उसे लगा कि गोहा ने एक बत्तख चुरा ली थी. अंत में दोनों ने कहा. "चलो जज के पास चलते हैं. देखते हैं हम में से कौन सही है."

जब जज ने समस्या सुनी तो उसने अपनी दाढ़ी नोची. वो जानता था कि पड़ोसी झूठ नहीं बोल रहा था, और वो यह भी जानता था कि गोहा ने बत्तख नहीं चुराई थी. इसलिए, उसने बीस पुलिसकर्मियों को उसी समय अदालत में हाज़िर होने का आदेश दिया. उसी समय बत्तखों को भी वहां लाया गया.

"तुम्हारे सामने बीस पुलिसकर्मी हैं?" जज ने गोहा से पूछा.

"यह सच है," गोहा ने कहा. "मेरे सामने बीस पुलिसकर्मी हैं."

"यदि प्रत्येक पुलिसकर्मी एक-एक बत्तख को पकड़ता है, तो बीस बत्तख होंगी," न्यायाधीश ने कहा.

"हाँ," गोहा ने कहा. "यह सच है."

प्रत्येक पुलिसकर्मी ने एक-एक बत्तख उठाई. लेकिन जब उन्होंने यह किया तो उनमें से एक पुलिसकर्मी खाली हाथ खड़ा रह गया.

जज ने गोहा से कहा. "गोहा, अब आप देख सकते हैं कि बीस पुलिसकर्मियों में से एक के पास बत्तख नहीं है. इसका क्या कारण है?"

"वजह साफ है मान्यवर," गोहा ने तुरंत उत्तर दिया. "बिना बत्तख वाला पुलिसकर्मी मूर्ख है. बत्तखें जब उसके सामने आई थीं—तब वो किसका इंतज़ार कर रहा था? उसने दूसरों की तरह क्यों नहीं एक बत्तख उठाई?"

गोहा ने एक शब्द भी कहने से इनकार किया

गोहा की पत्नी घर का सारा काम और खाना बनाती थी, कपड़े धोती थी और घर के एक सौ एक काम करती थी. गोहा, गधे के लिए जिम्मेदार था. गोहा का काम था कि वो बाहर आँगन में जाकर गधे को दिन में दो बार खाना खिलाए.

हालांकि, आज गोहा काफी थका हुआ और आलस महसूस कर रहा था.

"आज तुम गधे को खाना खिला दो," उसने अपनी पत्नी से विनती की. "केवल आज के दिन."

"नहीं," गोहा की पत्नी ने कहा. "वो आपका गधा है, और आप पर ही उसे बाहर ले जाने और उसे खिलाने की जिम्मेदारी हैं."

उसके बाद एक बड़ी बहस शुरू हुई. गोहा ने पत्नी से कहा, "सिर्फ एक बार गधे को खिलाना कोई बहुत ज्यादा काम नहीं है."

"नहीं! मुझे अपने तमाम काम करने हैं. वो आपका गधा है!"

अंत में, गोहा ने कहा. "मेरे दिमाग में एक विचार आया है. हम में से सबसे पहले बोलने वाला व्यक्ति ही गधे को खाना खिलायेगा. क्या तुम्हें वो मान्य है?"

"मंज़ूर है," गोहा की पत्नी ने कहा.

फिर गोहा जाकर कमरे के एक कोने में बैठ गया, और उनसे बात न करने की कसम खाई, जबकि उसकी पत्नी ने हमेशा की तरह अपने घर का पूरा कामकाज किया. उस दिन घर में कितनी शांति थी!

घर में इतनी शांति को गोहा की पत्नी बर्दाश्त नहीं कर पाई. फिर उसने कपड़े बदले और बाहर टहलने जाने का फैसला किया.

जब वो घर लौटी, तो उसने पाया कि गोहा अभी भी उसी कोने में बैठा हुआ था और बोल नहीं रही था. इसलिए, पत्नी दुबारा फिर से बाहर चली गई. इस बार वो अपने पड़ोसी से मिलने गई.

"स्वागत है, तुम्हारा," पड़ोसी ने कहा.

गोहा की पत्नी ने उत्तर में केवल अपने गले की ओर इशारा किया.

"अच्छा! तुम्हारे गले में खराश हैं. मैं तुम्हारे लिए कुछ गर्म नींबू-पानी बनाती हूँ."

गोहा की पत्नी ने मुस्कुराते हुए महिला को धन्यवाद दिया.

गर्म नीबू-पानी पीते समय पत्नी को इस बात का एहसास हुआ कि गोहा घर में अकेला था और उसने रात का खाना नहीं खाया था! अपने हाथ और मुंह के इशारों से उसने अपनी पड़ोसिन को समझाया कि उसे अपने पति के लिए कुछ खाने चाहिए था.

"मैं समझती हूँ," दयालु पड़ोसिन ने कहा. "मैं अपने बेटे को गोहा के लिए सूप का कटोरा लेकर तुम्हारे घर भेजूंगी."

इस दौरान एक चोर, गोहा के घर में घुस आया था और वो सब कुछ चुरा कर ले गया - तकिए, कपड़े, चाय का सेट और बहुत कुछ. चोर ने एक कोने में बैठे एक आदमी को देखा. पर उस आदमी ने एक शब्द भी नहीं कहा, जबकि उसके घर में चोरी हो रही थी. जाने से पहले, चोर गोहा के पास गया और वो गोहा की बड़ी पगड़ी को भी अपने साथ ले गया.

फिर भी गोहा एक शब्द नहीं बोला!

फिर चोर ने बाकी सब चीजों के साथ पगड़ी को भी बोरे में डाला और वो सटक गया.

चोर अभी निकला ही था कि पड़ोसी का बेटा सूप लेकर आया. उसने गोहा को मूर्ति की तरह चुपचाप बैठा पाया.

"हेलो, गोहा चाचा," लड़के ने कहा, लेकिन गोहा ने उसके अभिवादन का कोई जवाब नहीं दिया.

"मेरी माँ ने आपके लिए गर्म सूप भेजा है," लड़के ने कहा.

गोहा ने कुछ नहीं कहा. इसके बजाए, उसने इशारों से दिखाया कि उसके घर में चोरी हो गई थी और उसने अपने सिर की ओर इशारा करके बताया कि उसकी पगड़ी भी चोरी हो गई थी.

वो लड़का जो बहुत होशियार नहीं था उसे लगा जैसे गोहा सूप को अपने सिर पर डालने को कह रहा हो. फिर गरमा-गरम सूप गोहा के चेहरे पर बहने लगा.

गोहा ने लड़के को जमकर डांटा, लेकिन फिर भी वो एक शब्द नहीं बोला.

जब गोहा की पत्नी लौटी तो उसने घर को उल्टा-पुल्टा देखा. उसके तकिए, पर्दे और चाय का सेट सब गायब थे, और पति नंगे सिर बैठा था और उसका चेहरा सूप से सना था. वो चिल्लाई, "यहाँ क्या हो रहा है?"

इन शब्दों को सुनकर गोहा का चेहरा विजयी मुस्कान में बदल गया. "मैं जीत गया! तुम हार गईं!" वो चिल्लाया. "तुम पहले बोलीं इसलिए अब तुम ही जाकर गधे को खाना खिलाओ!"

गोहा के घर में चोर आए

एक रात के मध्य में, गोहा ने घर में कुछ आवाज़ें सुनीं और महसूस किया कि एक चोर घर में इधर-उधर भटक रहा था और चोरी करने के लिए कुछ खोज रहा था.

गोहा चुपचाप बिस्तर से उठकर एक अलमारी में जाकर छिप गया. चोर कमरों में घूमता रहा. अंत में, चोरी करने के लिए कुछ नहीं पाकर वो बड़ी अलमारी के पास आया. मुस्कुराते हुए उसने अलमारी का दरवाजा खोला - और अंदर उसने गोहा को पाया!

चोर चौंक गया! "आप यहाँ अलमारी में क्या कर रहे हैं?" उसने गोहा से पूछा.

"क्षमा करें महाशय, मुझे क्षमा करें," गोहा ने कहा, "मुझे यह जानकर बहुत बुरा लगा कि आपको मेरे घर में चोरी करने के लिए कुछ भी नहीं मिला. इसलिए शर्मिंदा होकर मैं खुद यहां आकर छुप गया."

गोहा के अंतिम शब्द

गोहा ने सार्वजनिक स्नानागार में जाने का फैसला किया! वो वहां पहले कभी नहीं गया था. फिर उसने अपनी पुरानी, रोज़ाना की पैंट-शर्ट पहनी और वो वहां गया. उसे गरीब समझकर स्नानागार के सेवकों ने उसकी ओर देखा तक नहीं. उन्होंने उसे साबुन का एक छोटा सा टुकड़ा और एक छोटा, गंदा तौलिया दे दिया.

गोहा को भाप से नहाना पसंद था, लेकिन स्नान करने के बाद जब उसने आस-पास बैठे हुए लोगों को देखा तो वे लोग बड़े-बड़े तौलिये में लिपटे हुए थे. वे चाय और नीम्बू-पानी पी रहे थे और मेवे से भरे केक खा रहे हैं. लेकिन गोहा को कोई नहीं पूछ रहा था!

जिस तरह से उसके साथ व्यवहार हुआ उससे गोहा खुश नहीं था. लेकिन स्नानघर छोड़ते समय उसने प्रत्येक सेवक को सोने का एक-एक सिक्का दिया.

"बहुत-बहुत धन्यवाद, सर," उन्होंने नीचे झुकते हुए कहा. यह आदमी अपने गरीब, पुराने कपड़ों में कितना उदार है! सेवक आपस में फुसफुसाए. यदि वो दुबारा स्नान करने आया, तो हम उसपर अपना सर्वश्रेष्ठ ध्यान देंगे.

अगले हफ्ते, गोहा ने फिर से अपने पुराने, रोज़मर्रा के कपड़े पहने और सार्वजनिक स्नानागार में एक बार फिर गया. जब सेवकों ने उसे आते हुए देखा तो वे उसके साथ एक राजा की तरह पेश आये. उन्होंने उसे एक सुगन्धित साबुन और एक सुन्दर, सफ़ेद, तौलिया दी. नहाने के बाद, उन्होंने उसे चाय का गिलास और एक प्लेट भर स्वादिष्ट केक दिए.

इस बार, स्नान से निकलने पर, गोहा ने प्रत्येक सेवक को सिर्फ एक-एक तांबे का सिक्का दिया.

वो देख सेवकों के चेहरे लटक गए. वे हैरान भी थे और निराश भी.

"आप देख रहे हैं," गोहा ने कहा, "मैंने आपको अभी जो तांबे के सिक्के दिए हैं, वे पहली बार स्नान के लिए दिए हैं, जब आपने मेरे साथ एक भिखारी जैसा किया था. उस पहली मुलाकात में मैंने आपको जो सोने के सिक्के दिए थे, उसकी सेवा आपने मुझे आज दी है."

गोहा ने कहा, "सावधान रहें और कभी भी लोगों को उनके कपड़ों और दिखावे से न आंकें," और फिर गोहा ने सीटी बजाते हुए स्नानघर छोड़ दिया.

गोहा ने अपने बेटे को जीवन के बारे में एक सबक सिखाया

गोहा एक ऐसे व्यक्ति था जो इस बात की परवाह नहीं करता था कि दूसरे लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे. "वह करो जो तुम्हें सही लगता हो," वो कहता था, "और लोगों को उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ सोचने दो."

लेकिन गोहा का एक बेटा था जो हमेशा इस बात की चिंता करता था कि लोग उसके बारे में क्या कहेंगे या क्या सोचेंगे. गोहा अपने बेटे को एक सबक सिखाना चाहता था.

इसलिए गोहा ने अपने गधे को काठी पहनाई और अपने बेटे से अगले गाँव चलने के लिए कहा. गोहा गधे की सवारी कर रहा था और उसका बेटा उसके पीछे-पीछे चल रहा था. तभी वे एक कॉफी शॉप पर इकट्ठा हुए कुछ लोगों के पास से गुजरे.

"उस स्वार्थी आदमी को देखो जो गधे पर सवार है और अपने गरीब बेटे को चलने के लिए मज़बूर कर रहा है," एक आदमी ने दूसरे से कहा.

तब गोहा गधे पर से उतरा और उसने अपने पुत्र से गधे की सवारी करने को कहा. गोहा खुद गधे के पीछे पैदल चलने लगा.

फिर वे बाज़ार में लोगों की एक और सभा के पास से गुज़रे. उन्होंने लड़के की ओर इशारा किया और कहा. "ज़रा उस लड़के को देखो. वो खुद सवारी कर रहा है और अपने बूढ़े पिता को चलने को मज़बूर कर रहा था. उसमें न तो कोई शिष्टाचार है और न ही बड़ों के प्रति कोई सम्मान है."

उसके बाद गोहा अपने बेटे के साथ गधे पर चढ़ गया. और वे दोनों गधे पर सवार होकर आगे बढ़ने लगे.

"बेचारा गधा," सड़क के पास खड़े कुछ लोगों ने कहा, "यह कितना अनुचित है कि वो गरीब जानवर आदमी और उसके लड़के, दोनों को ढो रहा है."

उसके बाद गोहा और उसके पुत्र ने मिलकर गधे को अपने कंधों पर उठाया. "अब, देखते हैं कि लोग क्या कहते हैं," गोहा ने कहा.

बेशक, अब सब उन पर हँसने लगे. "वो पागल आदमी और उसका बेटा गधे पर सवार होने के बजाय उसे उठा रहे हैं. यह कितना हास्यास्पद है!"

जब गधा एक बार फिर अपने चार पैरों पर चलने लगा तब गोहा अपने बेटे की ओर मुड़ा और उसने उससे कहा, "बेटा, तुम्हें पता होना चाहिए कि जीवन में, सभी लोगों को खुश करना असंभव है. इसलिए लोग क्या सोचते हैं, इस बारे में चिंता करने में अपना समय बर्बाद न करो."

गोहा ने नया गधा खरीदने का फैसला किया

गोहा के लिए अपने गधे से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ और नहीं था. वो गधे पर सवार होकर शहर में घूमता था और अपने दोस्तों से जाकर मिलता था. परन्तु वो अपने गधे से बहुत प्यार भी करता था, क्योंकि वो गधा उसके पास बहुत वर्षों से था.

लेकिन एक दिन एक दोस्त ने गोहा को सुझाव दिया कि वो अपने लिए एक नया गधा खरीदे, जो जवान हो, सवारी करने में अधिक आरामदायक हो और वर्तमान गधे से तेज दौड़ सके.

गोहा ने अपना सिर खुजलाया और अपने आप से कहा. "शायद आपकी बात सही है. मैं एक नया गधा खरीदने की कोशिश करूंगा."

हालांकि, एक नया गधा खरीदने से पहले गोहा को अपना वर्तमान बेचना था. इसलिए वो अपने गधे को बाजार में ले गया, और उसने उसे उस व्यापारी को सौंप दिया, जो गधे, खच्चर और घोड़े खरीदता-बेचता था.

व्यापारी ने तुरन्त ऊँचे स्वर में घोषणा की: "बिक्री के लिए एक नया गधा!" और तुरंत वहां पर भारी भीड़ जमा हो गई.

वो आदमी गधे के चारों ओर टहला, उसने भीड़ के सामने गधे का वर्णन करना शुरू किया:

“देखो, मेरे पास यहाँ कितना अच्छा गधा है. सबसे अच्छा!" व्यापारी चिल्लाया और उसने गधे के कानों को सहलाया. "देखो वो कितना शांत और कोमल है! ज़रा उसकी शक्तिशाली मांसपेशियों को तो देखो!" फिर तमाम लोगों ने गधे की परिक्रमा की. "देखो यह गधा, घोड़े की तरह दौड़ सकता है!"

अपने गधे की इतनी सारी प्रशंसा सुनने के बाद, गोहा ने खुद से कहा, "हे भगवान, मैं उसी तरह का गधा तो ढूंढ रहा था!" और फिर वो अपना ही गधा खरीदने के लिए आगे बढ़ा.

गोहा ने तीन बुद्धिमानों को पछाड़ दिया

गोहा जिस नगर में रहता था, उस नगर में दूर देश से तीन बुद्धिमान विद्वान आए. रात के खाने के दौरान राज्यपाल के महल में उन तीनों लोगों ने पूछा कि क्या उनके शहर में ऐसा कोई बुद्धिमान व्यक्ति था जिनसे वे कुछ कठिन प्रश्न पूछ सकते थे.

राज्यपाल ने अपना सिर खुजलाया, फिर उन्होंने गोहा के बारे में सोचा. गोहा, कठिन प्रश्नों का चतुराई से उत्तर देने में सक्षम होने के लिए मशहूर थे.

"गोहा को मेरे महल में बुलाओ," राज्यपाल ने अपने एक आदमी को आदेश दिया.

फिर गोहा ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और अपने सिर के चारों ओर सबसे बड़ी पगड़ी बांधी ताकि वो एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह दिखे.

महल के प्रांगण में गोहा ने पाया कि शहर के सभी प्रमुख नागरिक यह देखने के लिए आए थे कि वो तीन ज्ञानियों के सवालों का जवाब कैसे देगा.

जैसे ही वो अपने गधे से उतरा, पहला बुद्धिमान व्यक्ति गोहा के पास आया और उसने पूछा: "हे बुद्धिमान शेख, हमें यह बताओ, कि पृथ्वी का केंद्र कहाँ है?"

किसी झिझक के बिना, गोहा ने अपनी छड़ी से उस स्थान की ओर इशारा किया, जहां उसके गधे ने अपना बायां पैर रखा था. "बस उस के नीचे," गोहा ने कहा, "दुनिया का केंद्र है."

"आपके पास इसका क्या प्रमाण है?" पहले बुद्धिमान व्यक्ति ने पूछा.

गोहा ने उत्तर दिया, "यदि आप मेरी बात मानने से इनकार करते हैं, तो खुदाई करें और खुद अपने आप उसकी पुष्टि करें. यदि आप मुझे गलत पाते हैं तो आपको मुझे एक अज्ञानी मूर्ख कहने का पूरा अधिकार है."

तीनों ज्ञानियों ने आपस में एक-दूसरे को देखा और चुप रहे.

तब दूसरे बुद्धिमान व्यक्ति ने पूछा. "अच्छा, यह बताओ कि आकाश में कितने तारे हैं?"
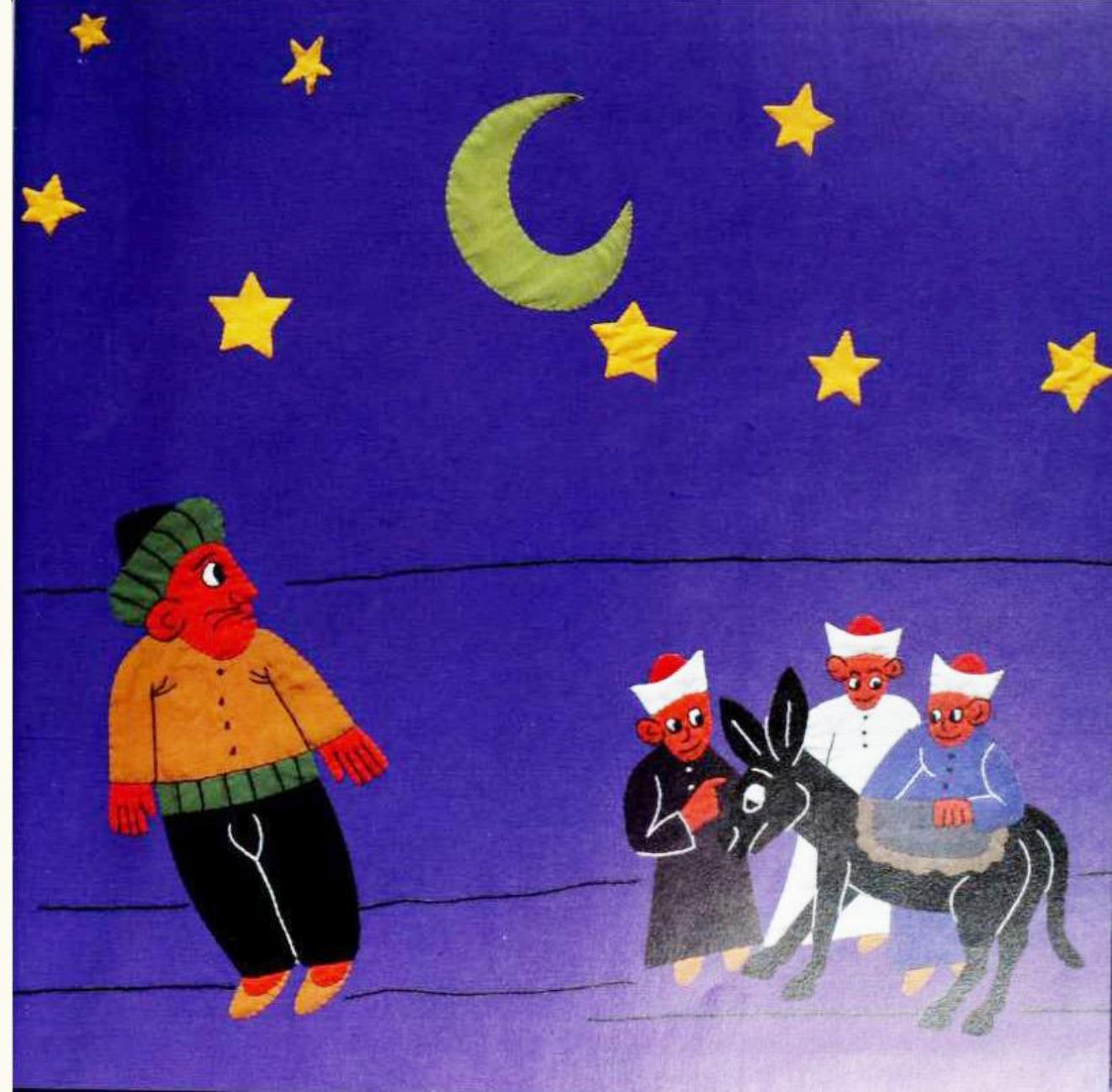
"और आप यह कैसे जानते हैं?" दूसरे बुद्धिमान व्यक्ति ने मांग की.

"यदि आप मुझ पर विश्वास नहीं करते हैं, तो मेरे गधे के शरीर के बाल गिनें," गोहा ने कहा.

“भला, कोई गधे के बाल कैसे गिन सकता है?" दूसरे बुद्धिमान व्यक्ति ने गुस्से से पूछा.

"और आकाश में तारे?" गोहा ने उसे उत्तर दिया, "क्या वे गिने जा सकते हैं?"

तीनों ज्ञानियों ने एक दूसरे की ओर देखा. उनके पास इसका कोई जवाब नहीं था.

फिर तीसरे ज्ञानी ने पूछा. "ठीक है, अगर तुम्हारे पास हर बात का जवाब है, तो बताओ कि मेरे सिर पर कितने बाल हैं?"

तुरंत, गोहा ने उत्तर दिया. "मेरे गधे की पूंछ पर जितने बाल हैं, उतने."

"और आप इसे कैसे साबित करेंगे?" तीसरे बुद्धिमान व्यक्ति ने पूछा. निश्चित रूप से उसने गोहा को मात दे दी थी.

"अपने सिर से एक बाल खींचो, और फिर मेरे गधे की पूंछ से एक बाल खींचो. अगर अंत में तुम्हारे सिर पर मेरे गधे की पूंछ जितने हैं बाल हों, तो मैं सही हूं. अगर वो नहीं हैं तो मैं गलत हूं."

तीनों ज्ञानी ठहाके मारकर हँस पड़े.

"क्या बात है!" उन्होंने कहा. "शेख गोहा, आप वाकई में एक महान ज्ञानी व्यक्ति हैं. आप हमें उन सवालों के इतने चतुर जवाब कैसे दे पाए, जिनका ज्यादातर लोगों के पास कोई जवाब नहीं होता है?"

गोहा ने उनसे कहा: "यदि आपके सामने कोई ऐसा प्रश्न हो जिसका कोई समझदार उत्तर न हो, तो उनके लिए कोई भी उत्तर काम करता है!"